आंबेडकर पथ ❙ वर्ष : 1 ❙ अंक : 01 ❙ जनवरी-जून 2024 ❙ ISSN : 3048-7781

डॉ. बी.आर. आंबेडकर—भूमण्डलीकरण और वर्तमान अर्थव्यवस्था की चुनौतियाँ

—रक्षिका
—अंकिता मिश्रा

मध्ययुग के अंत में यूरोप में कैपिटलिज़्म का उदय, अंतरराष्ट्रीयकरण की समकालीन प्रक्रिया का आरंभ था। इस प्रक्रिया ने विकसित दुनिया की तुलना में लैटिन अमेरिका और कैरिबियन का इतिहास अधिक प्रभावित किया है और यह पांचवीं सदी के आखिरी दशक से जारी है। वास्तव में, बौद्ध धर्म का भारत से बाहर प्रसार वैश्वीकरण का पहला प्रयास था। वर्तमान रूप में आर्थिक वैश्वीकरण का उत्थान, अमेरिका और यूरोप में पूंजीवादी शक्तियों की समृद्धि और उनके विश्व अर्थतंत्र में प्रमुखता का परिणाम था। भारत में संरचित जाति-भेद और लैटिन अमेरिका और पूर्व अफ्रीका जैसे विकसित देशों में सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता ने विकसित आर्थिक बलों को इन देशों में प्रवेश करने का मार्ग खोला। वैश्वीकरण का उद्देश्य आर्थिक उदारीकरण को बढ़ावा देना था, लेकिन इसने इन देशों की सामाजिक-सांस्कृतिक और राजनीतिक व्यवस्था पर व्यापक प्रभाव डाला। चीन जैसे देशों ने इसका लाभ उठाया। लेकिन भारत जैसे देश ने विकसित देशों को कुछ लोगों के फायदे के लिए समर्पित किया।

हाल ही में, भूमंडलीकरण, मुख्य रूप से आर्थिक कारणों से, मानव इतिहास में एक प्रक्रिया है। भारत अपने लंबे इतिहास, शिक्षा, ज्ञान और नवाचारों के लिए जाना जाता है। भारत ने स्वतंत्रता के बाद अपने लोकतंत्र को सबसे नृजातीय और

शोध अध्येता, वित्तीय प्रशासन विभाग, प्रबंधन विद्यापीठ, पंजाब केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बठिंडा
Email : Rakshika8007@gmail.com, ankita200798@gmail.com

सामाजिक विविधता वाले तंत्र में समाहित किया है और मानव विकास के क्षेत्र में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। यह दुनिया का चौथा देश बन गया है जो मंगलयान को अंतरिक्ष में पहुँचाने का समर्थन करने वाला था। इसकी व्यापक युवा जनसंख्या (28 प्रतिशत, 10-24 वर्षीय) और तकनीकी सुसज्जित मानव संसाधन की वजह से इसका अंतरराष्ट्रीय बाजार भी बहुत विकसित है।[1]

प्री-मॉडर्न, मॉडर्न और पोस्ट-मॉडर्न युग आर्थिक वैश्वीकरण का इतिहास बनाते हैं। 16वीं सदी में पूंजीवादी आर्थिक बलों का उत्थान आज के वैश्वीकरण की जड़ है। इतिहासकार कहते हैं कि बौद्ध धर्म सम्राट अशोक के शासनकाल में दक्षिण पूर्व एशियाई देशों, चीन, जापान और इजिप्ट में प्रवेश किया, जो सामाजिक, नैतिक और तर्कसंगत मूल्यों का पहला वैश्वीकरण था। यह भी कहा जाता है कि बुद्ध के उपदेशों ने यीशु मसीह को भी प्रेरित किया, जिससे वह लोगों की सेवा करने लगा। वैश्वीकरण के प्रचारकों ने अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका में तेज विकास का अनुमान लगाया और कहा कि 'पहले' और 'तीसरे' विश्व के बीच अंतर कम हो जाएगा और अंततः अर्थहीन हो जाएगा। लेकिन उपेक्षित लोगों की दृष्टि से, इन दोनों के बाज़ार के वैश्वीकरण के बाद जीवन की स्थिति और परिस्थितियाँ पूरी तरह से अलग हैं। इतिहासकारों ने बताया कि भारत में स्वर्ण का युग था, जिसमें सामाजिक जागरूक शासकों ने शासन किया था डॉ. बी.आर. आंबेडकर ने स्पष्ट रूप से कहा कि लंबे समय से चली आ रही जाति व्यवस्था ने देश को गरीबी की ओर ले गया। भारत में प्राकृतिक संसाधनों से संपन्न होने के बावजूद, गरीबी और पिछड़ापन बहुजनों (जिनमें अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, ओबीसी और अल्पसंख्यक शामिल हैं) के आर्थिक गतिविधि के लिए संभावनाओं का जटिल पक्ष है। इतिहास बताता है कि जब राजाओं ने बौद्ध धर्म को अपनी जीवनशैली के रूप में अपनाया और इसे दुनिया भर में फैलाया, बौद्ध धर्म ने तर्कसंगत सोच और नैतिक मूल्यों को सर्वोच्च स्तर पर उठाया। डॉ. बी. आर. आंबेडकर ने इस पर इशारा किया कि भारतीय अर्थिक बलों का अधिकांश हिस्सा जनसंख्या के हाथ में होना चाहिए ताकि ऐसी नीतियाँ और आर्थिक गतिविधियाँ लागू की जा सकें जो सभी लोगों के लिए फायदेमंद हों, खासकर उन लोगों के लिए जो निचली जातियों और अल्पसंख्यकों के रूप में कार्य करते हैं।

आंबेडकर की आर्थिक विचारधारा

विदेश में आर्थिक शिक्षा में पहले भारतीय प्रोफेसर जो दलित समाज से आते थे, डॉ. आंबेडकर थे। उन्होंने भारतीय वित्त आयोग की स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमिका

निभाई और देश के विकास के लिए महिलाओं के साथ समानता को प्राथमिकता दी। उनके विचार और दृष्टिकोण ने भारत के आर्थिक विकास और प्रगति के भविष्य को व्यापक और आशावादी बनाया। 1923 का डीएससी थीसिस, 'रुपए की समस्या, इसकी उत्पत्ति और समाधान' रुपए का मूल्य घटने के कारणों और इसे बढ़ाने के उपायों को बताता है। वे गरीबों और असहाय लोगों के लिए आयकर में कमी की सिफारिश करते थे। आंबेडकर ने जाति व्यवस्था का विरोध किया क्योंकि इसने देश में असमानता पैदा की और लोगों को अलग-अलग वर्गों में बांट दिया था। आंबेडकर ने ब्रिटिश भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान ब्रिटिश इंडिया के सार्वजनिक खजाने के असफल होने के कारणों की व्याख्या की और उन्होंने सार्वजनिक वित्त और परिवार नियोजन की महत्त्व पर जोर दिया कि भारतीय अर्थव्यवस्था की समान आर्थिक और राजनीतिक वृद्धि होनी चाहिए।[2]

भारत के आर्थिक विकास में आंबेडकर की राजनीतिक वृद्धि और उत्साह ने नई विद्युत शक्ति बनाई। श्रम विभाग ने विद्युत शक्ति व विकास को बढ़ावा देने के लिए एक नीति पत्र बनाया। यह सुझाव दिया गया था कि कुशल प्रबंधन के साथ राज्य या क्वासी-राज्य विद्युत उद्यम बनाया जाए, लेकिन निजी क्षेत्र का पंजीकरण नहीं किया गया था और इसके अतिरिक्त, विद्युत शक्ति का विकास क्षेत्रीय रूप से किया जाए। राजनीतिक, संवैधानिक और आर्थिक मुद्दों का समाधान आंबेडकर ने किया, जबकि तकनीकी विशेषज्ञों ने विस्तृत तकनीकी विवरण को कुशलता से काम में लाया। सिंचाई और विद्युत शक्ति के विकास के लिए पानी की नीति बनाते समय आंबेडकर को निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का समाधान करना था–

(क) सिंचाई और विद्युत शक्ति के विकास के लिए भारत की पूरी नीति होने का कारण,
(ख) इंटरस्टेट नदियों पर सिंचाई और विद्युत शक्ति परियोजनाओं के विकास में केंद्र सरकार की सक्रिय भूमिका की आवश्यकता,
(ग) श्रम विभाग द्वारा भागीदारी के लिए क्षेत्रों या परियोजनाओं की पहचान और हस्तक्षेप की प्रकृति,
(घ) संविधान अधिनियम 1935 के द्वारा निर्धारित सीमा को पार करने के लिए अंतरराज्यीय नदियों पर परियोजनाओं को शामिल करने के लिए कार्यक्षेत्र का यांत्रिक अधिकार विकसित करना,
(ङ) जल संसाधन विकास के लिए सही विकास दृष्टिकोण का चयन करना, नदी घात क्षेत्र की परियोजनाओं को बहुउद्देशीय विकास के लिए प्रबंधित करने के लिए, केंद्र सरकार की सक्रिय भागीदारी के साथ, आंबेडकर ने अपनी राजनीतिक स्थिति, अत्यधिक चिंताओं और उच्च विद्या के साथ सफलतापूर्व भी भारतीय नीति बनाई।

आर्थिक परिणाम

हिन्दू सामाजिक व्यवस्था में निजी संपत्ति, व्यापार, रोजगार, मजदूरी, शिक्षा और अन्य से जुड़े आर्थिक अधिकारों का निर्माण और विकास व्यापारिक असमानता और पिछड़ापन को जन्म दे सकता था। इसका प्रत्याशित काम और निवेश की प्रेरणा पर स्पष्ट प्रभाव था। नियामक नियम ने काम करने की उत्सुकता कम कर दी। उपभोक्ता के आर्थिक क्षेत्रों में श्रम, पूंजी और उद्यमिता के लिए यात्रा पर प्रतिबंध लगाने से प्रतिस्पर्धा कम होती है और अधूरी और एकाधिकारिक स्थिति बनती है।[3] इसके अलावा, व्यावसायिक गतिविधियों में श्रम, पूंजी और उद्यमिता की ओर से चाल पर प्रतिबंध, साथ ही पेशेवर योजनाओं में उद्यमिता और उद्यमिता पर प्रतिबंध, आर्थिक क्षेत्रों में असमर्थता को जन्म देता है। यही कारण है कि उपभोक्ता के बीच अपूर्ण और एकाधिकारपूर्ण स्थिति बनाने का अधिकार प्राप्त हुआ। यह तंत्र मानव की प्राकृतिक शक्तियों और प्रवृत्तियों को सामाजिक नियमों की आवश्यकताओं की ओर ले जाता है, जो इसे एक व्यावसायिक संस्था के रूप में कार्य करने में असमर्थ बनता है। इस तंत्र ने भौतिक श्रम को अपमानित करने और बुद्धि को काम से अलग करने के लिए यह अतिरिक्त कट्टरता पैदा की है। कुछ कंपनियाँ कास्ट सिस्टम की सामान्य योजना में श्रम की गरिमा को कमजोर करते हैं क्योंकि वे इसे सामाजिक अपमान मानते हैं। इन व्यवसायों में मजबूर लोगों से काम करने से उम्मीद है कि वे अपनी नौकरी से आत्मतृप्ति नहीं पा सकते, अगर व्यवसाय उनकी सामाजिक स्थिति को खराब करता है। इसलिए वह कभी काम करने के लिए प्रेरित नहीं हो सकते। वास्तव में, किसी व्यक्ति की सामाजिक स्थिति को किसी विशेष काम की तलाश में अपमानित किया जाता है, तो काम कुशलता नहीं बढ़ सकती।

व्यवसाय के क्षेत्र में व्यक्ति के व्यावसायिक निर्णयों पर सामाजिक प्रतिबंध का प्रभाव दूसरा है। पहली बात यह है कि व्यावसायिक गतिविधियों में चयन को पुनर्स्थापित करने की अनुमति न देने से जाति विभिन्न समूहों में स्वेच्छापूर्ण बेरोजगारी का सीधा कारण बनता है, क्योंकि एक धार्मिक हिंदू कुछ समय के लिए बेरोजगार रहना अपनी जाति को निर्धारित नहीं करने वाले काम करने से अच्छा मानेगा। दूसरी बात, निपक्ष बाजार प्रतिस्पर्धा के लिए आर्थिक प्रबलता आवश्यक है। जाति व्यवस्था इन सभी बाजारों को अलग बनती है क्योंकि यह श्रम, धन और उद्यमिता की चाल को रोकती है। यह एक विशेष जाति में आदान-प्रदान को रोकता है, इसलिए प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने की बजाय, श्रम और पूंजी बाजारों में अपूर्ण और एकाधिकारिक स्थिति लाता है। इस प्रकार श्रम और पूंजी एक से दूसरे में नहीं बहते, क्योंकि यह सिस्टम आर्थिक गतिविधियों

में उनकी चाल को प्रतिबंधित करता है। यह विभिन्न आर्थिक गतिविधियों में धन और श्रम के हस्तांतरण को रोकता है। इससे संसाधन आबंटन में कमी आती है, जिसके बारे में नव-क्लासिकल आर्थिक विशेषज्ञ इतना बोलते हैं।[7]

जातिवाद से प्रेरित आर्थिक योजनाओं ने हालांकि अनुसूचित जाति को सबसे बुरा प्रभाव डाजा था एवं उन्हें शिक्षा और सम्पत्ति का कोई अधिकार नहीं था। उच्च जातियों की सेवा के लिए उन्हें अपना काम नहीं करने दिया गया था तथा उन्हें सैन्य सेवा या व्यापार करने का अधिकार नहीं था। उनसे सभी जीवन उपायों को छीन लिया गया। आंबेडकर ने इस संदर्भ में कहा, ''यूरोप में, जब शक्तिशाली लोग कमजोरों का शोषण करने से लज्जित नहीं हुए थे, वे कभी भी इतना शर्मसार तरीके से कमजोरों को शोषित नहीं करने की योजना बना लेते थे, जैसा कि हिंदूओं ने भारत में किया गया था।'' यूरोप में कमजोर लोगों को शारीरिक सेवा, राजनीतिक सेवा, और नैतिक सेवा के लिए लड़ने का हक था। उन्होंने कभी भी इन तीनों उदाहरणों को कमजोरों से छुपाया नहीं था। लेकिन भारत में अनुसूचित जाति को ये सभी अधिकार दिए गए थे। इस प्रकार, अनुसूचित जाति को व्यवस्था ने उद्यमिता की स्वतंत्रता और सुरक्षा से वंचित कर दिया था।

आंबेडकर के विचार का मुख्य मुद्दा दुःखी और अन्यायपूर्ण समाज में दबे लोगों का उत्थान है। विभिन्न विषयों, जैसे संवेदना और वैश्वीकरण को आंबेडकर की दृष्टि से समाया जा सकता है। यह दारिद्रय, दबे और पीड़ित लोगों को जीवन देने, दबे लोगों को उठाने और उन्हें स्वतंत्रता, समता और अखंडता देने का लक्ष्य रखता है, जो उनके दारिद्रय, उत्कृष्टता और समाज में उन्नति के सिद्धांत को बखूबी प्रतिष्ठापित करता है। इसके बाद हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि वैश्विीकरण केवल बदलते समाजों तक पहुँचा सकता है। वर्तमान परिस्थितियों में कई नीतियाँ लागू हो चुकी हैं, लेकिन इनसे केवल ऊपरी वर्गों को फायदा हुआ है, जबकि दलित वर्ग अब भी वैश्वीकरण में समानता पाने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं, जो समाज में एक बुरी बात बन रही है। उदाहरण के लिए, प्लानिंग कमीशन के अध्यक्ष डॉ. मौंटेक सिंह आहलूवालिया ने अपने लेख 'ग्लोबलाइजेशन एण्ड इंडियन इकोनॉमी' में कहा था कि ''हर कोई बात कर रहा है, लेकिन हर कोई चल नहीं रहा है। भारत के वैश्विक अर्थतंत्र में बढ़ती सहभागिता से अब अधिकांश लोग सहमत हैं, लेकिन इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए और भी कई कदम उठाए जाने की जरूरत है।

डॉ. भीमराव आंबेडकर ने भारतीय समाज में कई महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों और सुधारों के माध्यम से आर्थिक और वैश्विकरण में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है—डॉ. भीमराव आंबेडकर

ने अपना जीवन जातिवाद और जातिवादी अन्याय के खिलाफ संघर्ष किया। उन्होंने जातिवाद को समाज में मिलकर न्याय, समरसता और समानता का प्रचार करने की कोशिश की। इस समर्पण ने समाज में मिलकर न्याय, समरसता लाने में मदद की है। उनके उदारवादी विचारों को जातिवाद से बचाने के लिए उन्होंने न्याय, समानता और समरसता के मूल सिद्धांतों को विकसित किया। उन्होंने आर्थिक समानता के लिए समर्थन जुटाने के कई उपायों का सुझाव दिया। समाज और आर्थिक समानता की प्राप्ति में आंबेडकर का यह संघर्ष महत्त्वूर्ण है। अपनी योजनाओं और सुधारों के माध्यम से अनुसूचित जातियों और वंचित वर्गों को आर्थिक सहायता प्रदान करने का प्रयास किया, जिससे वे समृद्धि की ओर बढ़ सकें। उनका संघर्ष आज भी हमें एक समृद्ध और समान समाज बनाने के लिए प्रेरित करता है और उनके योगदान ने आर्थिक समानता को बढ़ावा देने में मदद की है।

डॉ. आंबेडकर ने अपने पूरे जीवन के दौरान न्याय व्यवस्था को बेहतर बनाने के प्रति प्रतिबद्ध रहे और भारतीय संविधान को बनाने में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उन्हें न्याय और समानता के मूल सिद्धांतों को प्रोत्साहित करने का उनका यह संघर्ष बहुत महत्त्वपूर्ण था, जिससे भारतीय समाज एक न्यायपूर्ण और सुखी समाज की ओर बढ़ा। उन्होंने संविधान में सुधार करके समानता की भावना को बढ़ाया और न्याय की सुनिश्चितता के लिए कई महत्त्वपूर्ण प्रावधानों को जोड़ा। शिक्षा के अधिकार, सामूहिक न्याय और समाज के विकास जैसे उपायों को उन्होंने सामाजिक और आर्थिक असमानता को दूर करने के लिए सुझाया। संविधान बनाते समय, उन्होंने समानता के मूल सिद्धांतों को विकसित किया। उन्होंने समृद्धि और समानता को बढ़ावा देने के लिए अनुसूचित जातियों, अत्यंत पिछड़े वर्गों और महिलाओं के अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए कई कानून बनाए। आज भी, उनका यह कार्यक्षेत्र समाज में न्यायिक सुधारों और संवैधानिक प्रणाली में सुधार करके समृद्धि और समानता की दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है।[4]

डॉ. भीमराव आंबेडकर ने समानता और समरसता के माध्यम से शिक्षा को समाज में फैलाने के लिए बहुत कुछ किया। वंचित वर्गों और अनुसूचित जातियों को शिक्षा का अधिकार दिलाने के लिए उनकी शिक्षा नीति ने कई कदम उठाए। उन वर्गों के लोगों को जीवन में आगे बढ़ाने के लिए समर्पित शिक्षा संस्थानों की स्थापना की। उन्हें लगता था कि शिक्षा असमानता और प्रभुत्व के खिलाफ लोगों को सशक्त करने का एक प्रभावी साधन है। शिक्षा ने लोगों को समृद्धि और समानता की ओर बढ़ने का सामाजिक और आर्थिक साधन दिया। शिक्षा के माध्यम से लोगों को स्वावलंबी बनाने और आर्थिक रूप से सशक्त बनाने का भी संदेश दिया। उनकी शिक्षा नीति ने समाज में आर्थिक समानता

की दिशा में एक नया अध्याय खोला और शिक्षा के माध्यम से समाज के हर वर्ग को समान अवसरों का हकदार बनाया।

डॉ. आंबेडकर का यह सोचने का तरीका अद्‌भुत था, जो उन्हें भारत को जातिवाद, गरीबी और असमानता में मुक्त करने के लिए विश्वव्यापी उत्कृष्टता की ओर प्रेरित करता था। उनका कहना था कि भारत अपने आत्मनिर्भर होने के लिए विकासशील देशों की शिक्षा, तकनीकी और आर्थिक नीतियों का अध्ययन करेगा।[6] उन्हें अन्य देशों की नीतियों और प्रणालियों को अपनाने की प्रेरणा दी गई, जो उन्हें समृद्धि और विकास के मार्ग पर ले जा सकती थीं। उनका सुझाव था कि भारत को अपनी समृद्धि की ओर बढ़ने में मदद करने के लिए अपने संविधान, नीतियाँ और अन्य नियमों में विदेशी नीतियों को शामिल करना चाहिए।

भविष्य का लक्ष्यः

भविष्य में हमें भूमंडलीकरण, आंबेडकरवाद और विकास के सिद्धांतों पर आधारित आर्थिक विकास की दिशा में काम करना होगा। इसमें सामाजिक न्याय, समानता और पर्यावरण संरक्षण का ध्यान रखना चाहिए।

समानता और सामाजिक न्याय : आंबेडकरवाद के सिद्धांतों के आधार पर हमें समाज में समानता की दिशा में काम करना होगा। जातिवाद, लिंगभेद और अन्य सामाजिक असमानताओं के खिलाफ सख्ती से कार्रवाई करनी चाहिए। हम सभी वर्गों को एक साथ मिलकर सामाजिक समानता की ऊँचाइयों तक पहुँचाना होगा, अगर हम एक समरस और समान समाज बनाना चाहते हैं।

आर्थिक सुख : भूमंडलीकरण के सिद्धांतों के अनुसार, हमें आर्थिक समृद्धि में सुधार करना होगा। हमें सुशासन और सही निर्णयों के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में विकास को प्रोत्साहित करना होगा। विपन्न वर्ग को विकास के फायदे में शामिल करके एक संपन्न देश बनाना होगा।

पर्यावरण की सुरक्षा : भविष्य के लिए पर्यावरण संरक्षण महत्त्वपूर्ण होगा। सुरक्षित और स्वस्थ पर्यावरण बनाए रखने के लिए हमें कई तरीकों का अध्ययन करना होगा और इन तरीकों को व्यवहार में लागू करना होगा। यह मानवता और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित भविष्य बनाएगा।

तकनीकी सुधार : विज्ञान और तकनीकी में तेजी से बढ़ती हुई दुनिया में, हमें नवीनतम तकनीक का सही रूप से उपयोग करना होगा। इससे आर्थिक समृद्धि बढ़ेगी

और नए रोजगार पैदा होंगे। समृद्ध और विशिष्ट तकनीकी योजनाओं से हमें समाज में आर्थिक विकास की गति बढ़ाने में सहायता मिलेगी।

शिक्षा का प्रचार शिक्षा क्षेत्र में नई तकनीकी उन्नति का इस्तेमाल करके शिक्षा को बेहतर बनाना होगा। शिक्षा सामाजिक और आर्थिक समानता का एक प्रभावी आधार बन सकती है। इससे हम युवा पीढ़ी को अधिक बुद्धिमान और जिम्मेदार नागरिक बना सकते हैं।

डॉ. बी.आर. आंबेडकर ने अपने जीवनकाल में भारत की अर्थव्यवस्था और वैश्वीकरण के बारे में कई महत्त्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए, जो उन्हें सामर्थ्यपूर्ण और न्यायपूर्ण दृष्टिकोण की जगह देते थे। उनका लक्ष्य था कि भारत एक समृद्ध, समाजवादी, समानतापूर्ण देश बन जाए, जो अपने लोगों को बेहतर जीवन के लिए एकजुट करती हो। डॉ. आंबेडकर ने आर्थिक रणनीति को प्राथमिकता दी और विकसित और अविकसित देशों में आर्थिक और सामाजिक रणनीति को बढ़ावा देने के लिए कई उपायों की सिफारिश की। उन्होंने आर्थिक विकास के लिए शिक्षा और अनुसंधान में निवेश का समर्थन किया और इसे समृद्धि की कुंजी माना। डॉ. आंबेडकर ने इसके साथ ही एक मजबूत आर्थिक नीति का समर्थन किया था, जो समाज के सभी वर्गों को समृद्धि से लाभ मिलेगा।

संदर्भ

1. बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर सम्पूर्ण वाङ्मय खंड-18, डॉ. आंबेडकर प्रतिष्ठान, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, नई दिल्ली-1, संस्करण : अगस्त 2020, पृष्ठ-43
2. *EPRA International Journal of Socio-Economic and Environmental Outlook.* EPRA JOURNALS. *Crossref,* https://doi.irg/10.36713/eora0314.
3. *Ingle, M. R. "Relevance of Dr. Ambedkar's Economic Philosophy in the Current Scenario." International Research Journal (20 10).*
4. *Jagan, Sushma N. "The Process of Globalization Affecting the Lives of Dalits : A View of Dr. B.R. Ambedkar". SSRN Electronic Journal, Elsevier BV, 2014. Crossref,_https://doi.irg/10.2139/ssrn.2413088 (-)*
5. *DattatrayaLinga Hebbar. "Economic Thoughts of Dr. Ambedkar." International Journal of Multidisciplinary Research, Vp. 5, no. 5, International Journal for Multidisciplinary Research (IJF Mr), Sept. 2023.*

Crossref, https://doi.irg/10.36948/ijfmr.2023v05105.6461.

6. *Ambedkar's, Babasaheb, "Economic thoughts of Dr. Ambedkar for Indian Economy." Quarterly Journal Peer Reviewed Journal ISSN No. 2394:8426*
7. *Yoganandham, G. "Dr. Bhimrao Ambedkar's thoughts on Selected Economic, Political and Social Issues in India."*